सूरतुल हिज्र-१५

سُوْرَةُ الْحِجْرِ

सूर: अल-हिज्र मक्का में उतरी और इसकी निन्नानवे आयतें हैं और छ: रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़• लाम• रा•, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और खुले और वाज़ेह क़ुरआन की।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿1﴾

२. वह भी वक़्त होगा जब काफ़िर अपने मुसलमान होने की कामना करेंगे।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿2﴾

३. आप उन्हें खाता, फ़ायदे उठाने और (झूठी) उम्मीदों में लीन (मशग़ूल) होता छोड़ दें, वह ख़ुद अभी जान लेंगे।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿3﴾

४. और किसी बस्ती को हम ने हलाक नहीं किया, लेकिन यह कि उस के लिए निर्धारित (मुक़र्ररा) लेख था।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿4﴾

५. कोई गुट अपनी मौत से न आगे बढ़ता है, न पीछे रहता है।[1]

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿5﴾

६. और उन्होंने कहा कि हे वह इंसान! जिस के ऊपर क़ुरआन उतारा गया है, बेशक तू तो कोई दीवाना है।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿6﴾

७. अगर तू सच्चा ही है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नही लाता?

لَوْمَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿7﴾

[1] जिस बस्ती को भी हम नाफ़रमानी के सबब हलाक करते हैं तो जल्दी नहीं करते, बल्कि हम ने एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है, उस समय तक उस बस्ती वालों को मौक़ा दिया जाता है, लेकिन जब वह मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो उन्हें बरबाद कर दिया जाता है फिर वह उस से आगे या पीछे नहीं होते।

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ⑧

८. हम फ़रिश्तों को सच के साथ ही उतारते हैं और उस वक़्त वे अवसर दिये गये नहीं होते।[1]

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ⑨

९. बेशक हम ने ही इस क़ुरआन को उतारा है और हम ही इस के मुहाफ़िज़ हैं।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ⑩

१०. और हम ने आप से पहले की क़ौमों में भी अपने रसूल (लगातार) भेजे।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪

११. और (लेकिन) जो भी रसूल (संदेशवाहक) आता, उस का वे मज़ाक उड़ाते।

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ⑫

१२. पापियों के दिलों में हम इसी तरह यही रचा दिया करते हैं।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ⑬

१३. वे इस पर ईमान नहीं लाते और बेशक पहले के लोगों का तरीक़ा (गुज़रा) हुआ है।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ⑭

१४. और अगर हम उन पर आकाश में दरवाज़े खोल भी दें और ये वहाँ चढ़ने लग जायें।

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ⑮

१५. जब भी वे यही कहेंगे कि हमें नज़रबंद कर दिया गया है, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ⑯

१६. और बेशक हम ने आकाश में बुर्जे बनाये हैं, और देखने वालों के लिए इसे शोभामान (मुज़य्यन) किया है।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ⑰

१७. और उसे हर धिक्कारे शैतान से महफ़ूज़ रखा है।[2]

---

[1] अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते हम हक़ के साथ ही भेजते हैं, यानी जब हमारी हिक्मत और मर्ज़ी अज़ाब भेजने की होती है तो फिर फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं, और फिर वे अवसर (मुहलत) नहीं दिये जाते तुरन्त नाश कर दिये जाते हैं।

[2] مرجوم، رجيم के माना में है पत्थर मारना। शैतान को रजीम इसलिए कहा गया है कि यह जब भी आकाश की तरफ़ जाने की कोशिश करता है तो आकाश से 'शहाब साक़िब' (उल्का) उस

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿18﴾

१८. हां, जो चोरी छुपे सुनने की कोशिश करे उस के पीछे खुला शोला लगता है।[1]

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿19﴾

१९. और धरती को हम ने फैला दिया है और उस पर पहाड़ डाल रखे हैं, और उस में हम ने हर चीज़ निश्चित मात्रा (तादाद) में उगा दी है।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَن لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿20﴾

२०. और उसी में हम ने तुम्हारी रोज़ियां बना दी हैं, और जिन्हें तुम रिज़्क़ देने वाले नहीं हो।

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿21﴾

२१. और जितनी भी चीज़ें हैं, सबका ख़ज़ाना हमारे पास है,[2] और हम हर चीज़ को उस के निर्धारित (मुतअय्यन) मात्रा में उतारते हैं।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿22﴾

२२. और हम बोझल हवायें[3] भेजते हैं फिर आकाश से बारिश करके तुम्हें पिलाते हैं, और तुम उसका भण्डार (ज़ख़ीरा) करने वाले नहीं हो।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿23﴾

२३. और हम ही जिलाते और मारते हैं और (आख़िरकार) हम ही वारिस हैं।

पर टूट कर गिर पड़ते हैं, फिर रजीम धिक्कारे और बुरे के माना में भी इस्तेमाल होता है, क्योंकि जिसे पत्थरों से मारा जाता है, उसे हर तरफ़ से धिक्कारा और बुरा भी कहा जाता है। यहां अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि हम ने आकाशों की हिफ़ाज़त की है हर शैतान रजीम से, यानी इन सितारों के ज़रिये, क्योंकि ये शैतान को मारते हैं और उसे भागने पर मजबूर कर देते हैं।

[1] इसका मतलब यह है कि शैतान आकाशों पर बातें सुनने के लिए जाते हैं, जिन पर 'शहाब साक़िब' (उल्का) टूट कर गिरते हैं, जिन से कुछ तो जल जाते हैं और कुछ बच जाते हैं और कुछ सुन आते हैं।

[2] कुछ आलिमों ने خزائن से मुराद बारिश लिया है, क्योंकि बारिश ही पैदावार का ज़रिया है, लेकिन ज़्यादा सही बात यह है कि इस से मुराद सभी मुमकिन ख़ज़ाना हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी मर्ज़ी और हिक्मत की बिना पर अदम से वजूद में लाता रहता है।

[3] हवा को बोझल इसलिए कहा गया है कि यह उन बादलों को उठाती हैं जिनमें पानी होता है। जिस तरह لقحة गर्भवती ऊंटनी को कहा जाता है जो गर्भ में बच्चा उठाये होती है।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ (24)

२४. और तुम में से आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले भी हमारे इल्म में हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ (25)

२५. और आप का रब सब लोगों को जमा करेगा, बेशक वह बड़ा हकीम बड़े इल्म वाला है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ (26)

२६. और बेशक हम ने इंसान को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी, पैदा किया है।

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ (27)

२७. और उस से पहले जिन्नात को हम ने लौ (ज्वाला) वाली आग[1] से पैदा किया।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ (28)

२८. और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक इंसान को काली सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ (29)

२९. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं तो तुम सब उस के लिए सज्दा कर देना।[2]

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ (30)

३०. इसलिए सभी फ़रिश्तों ने सब के सब ने माथा टेक दिया।

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ (31)

३१. लेकिन इब्लीस, कि उस ने सज्दा करने वालों में शामिल होने से इंकार कर दिया।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ (32)

३२. (अल्लाह तआला ने) कहा, हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ?

---

[1] جِنٌّ को جِن इसलिए कहा जाता है कि वह आँखों से दिखाई नहीं देते।

[2] सज्दा का यह हुक्म सम्मान स्वरूप (ताज़ीम के लिए) था, इबादत के तौर में नहीं और चूँकि यह अल्लाह का हुक्म था इसलिए इस के मान्य होने में कोई शक नहीं, लेकिन अब इस्लामी धार्मिक नियम में किसी को सम्मान स्वरूप भी सज्दा करना जायेज़ नहीं।

३३. वह बोला कि मैं ऐसा नहीं कि इस इंसान को सज्दा करूँ जिसे तूने काली और सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा किया है ।[1]

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿33﴾

३४. कहा कि अब तू जन्नत से निकल जा क्योंकि तू धिक्कारा हुआ है ।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿34﴾

३५. और तुझ पर मेरी लानत है क़यामत के दिन तक ।

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿35﴾

३६. कहने लगा हे मेरे रब ! मुझे उस दिन तक मौक़ा अता कर कि लोग दोबारा उठा खड़े किये जायें ।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿36﴾

३७. कहा कि (ठीक है) तू उन में से है, जिन्हें मौक़ा दिया गया है ।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿37﴾

३८. मुक़र्रर दिन के वक़्त तक का ।

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿38﴾

३९. (शैतान ने) कहा कि हे मेरे रब ! तूने मुझे भटकाया है, मुझे भी क़सम है कि मैं भी धरती में उन के लिए मोह पैदा करूंगा और उन सबको भटकाऊंगा ।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿39﴾

४०. सिवाय तेरे उन बन्दों के जो चुन कर लिये गये हैं ।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿40﴾

४१. कहा कि हाँ यही मुझ तक पहुँचने का सीधा रास्ता है ।

قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿41﴾

४२. मेरे बन्दों पर तेरा कोई असर नहीं, लेकिन हाँ जो भटके हुए लोग तेरी इत्तेबा करेंगे ।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿42﴾

४३. और बेशक उन सब के वादे का मुक़ाम जहन्नम है ।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿43﴾

---

[1] शैतान ने क़ुबूल न करने का सबब हज़रत आदम का मिट्टी और इंसान होना बताया, जिसका मतलब यह हुआ कि इंसान को उस के इंसान होने के सबब हीन समझना यह शैतान का (विचार) ख़्याल है जो मोमिनों का ईमान नहीं हो सकता ।

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿44﴾

४४. जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उनका एक हिस्सा बँटा हुआ है।[1]

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿45﴾

४५. बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿46﴾

४६. (उन से कहा जायेगा) सलामती और अमन के साथ उस में दाख़िल हो जाओ।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿47﴾

४७. और उन के दिलों में जो कुछ भी कीना और रंजिश थी हम सब कुछ निकाल देंगे, वे भाई-भाई बने हुए एक-दूसरे के सामने सिंहासन पर बैठे होंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿48﴾

४८. न तो वहाँ उन्हें कोई दुख छू सकता है और न वह वहाँ से कभी निकाले जायेंगे।

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿49﴾

४९. मेरे बन्दों को ख़बर कर दो कि मैं बहुत माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला हूँ।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿50﴾

५०. और साथ ही मेरे अज़ाब भी बहुत दुखदायी हैं।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿51﴾

५१. और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों का (भी) हाल सुना दो।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿52﴾

५२. कि जब उन्होंने उस के पास आकर सलाम किया, तो उस ने कहा कि हम को तो तुम से डर लगता है।[2]

---

[1] यानी हर दरवाज़े ख़ास तरह के लोगों के लिए मुक़र्रर होंगे, जैसे एक दरवाज़े मूर्तिपूजकों के लिए, एक नास्तिकों के लिए, एक काफ़िरों के लिए, एक बदकारों, ब्याज खाने वालों, चोरों और डाकूओं के लिए आदि, या सात दरवाज़ों से मुराद सात तह और दर्जे हैं।

[2] हज़रत इब्राहीम ﷺ को इन फ़रिश्तों से डर इसलिए हुआ कि उन्होंने हज़रत इब्राहीम का तैयार किया भुना हुआ बछड़े का गोश्त नहीं खाया, जैसाकि सूर: हूद में बयान हो चुका है। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के अज़ीम पैग़म्बर को भी (छिपी बातों) ग़ैब का इल्म नहीं होता, अगर उन्हें ग़ैब का इल्म होता तो हज़रत इब्राहीम समझ जाते कि आने वाले मेहमान

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿53﴾

५३. उन्होंने कहा डर न करो, हम तुम्हे एक इल्म वाले लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं।

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿54﴾

५४. कहा क्या इस बुढ़ापे के छू लेने के बाद तुम मुझे ख़ुशख़बरी देते हो ! ये ख़ुशख़बरी तुम कैसे दे रहे हो?

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿55﴾

५५. उन्होने कहा, हम आप को बिल्कुल सच्ची ख़ुशख़बरी सुनाते हैं, आप मायूस लोगों में शामिल न हों।

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿56﴾

५६. कहा अपने रब की रहमत से मायूस तो केवल (भटके और) बहके हुए लोग ही होते हैं।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿57﴾

५७. पूछा कि हे अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो)! तुम्हारा ऐसा क्या ख़ास काम है?[1]

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿58﴾

५८. उन्होंने जवाब दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं।

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿59﴾

५९. लेकिन लूत का परिवार कि हम उन सब को जरूर बचा लेंगे।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿60﴾

६०. सिवाय लूत की पत्नी के कि हम ने उसे रुकने और बाक़ी रह जाने वालों में मुक़र्रर कर दिया है।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿61﴾

६१. जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत परिवार के पास पहुँचे।

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿62﴾

६२. तो लूत ने कहा तुम लोग तो कुछ अंजान से मालूम होते हो।

(अतिथि) फ़रिश्ते हैं और उन के लिए खाना तैयार करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि फ़रिश्ते को इंसानों की तरह खाने-पीने की जरूरत नहीं है।

[1] हजरत इब्राहीम ने इन फ़रिश्तों की बातचीत से यह अंदाजा लगाया कि यह सिर्फ़ औलाद की ख़ुशख़बरी देने ही नहीं आये हैं, बल्कि उन के आने की असल वजह कुछ और है, इसलिए उन्होंने पूछा।

६३. उन्होंने कहा (नहीं) बल्कि हम तेरे पास वह चीज लाये हैं, जिस में ये लोग शक कर रहे थे।

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿63﴾

६४. और हम तो तेरे पास (वाजेह) सच लेकर आये हैं और हम हैं भी पूरे सच्चे।

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿64﴾

६५. अब तू अपने परिवार के साथ इस रात के किसी हिस्से में चल दे, तू ख़ुद उन के पीछे रहना, (और होशियार)! तुम में से कोई भी मुड़ कर न देखे और जहाँ का हुक्म तुम्हें किया जा रहा है वहाँ चले जाना।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿65﴾

६६. और हम ने उसकी तरफ़ इस बात का फ़ैसला कर दिया कि सुबह होते-होते उन सबकी जड़ें काट दी जायेंगी।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿66﴾

६७. और शहरी लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आये।

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿67﴾

६८. (लूत ने) कहा ये लोग मेरे मेहमान हैं तुम मुझे ज़लील न करो।

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿68﴾

६९. और अल्लाह (तआला) से डरो और मुझे अपमानित न करो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿69﴾

७०. वे बोले कि क्या हम ने तुम्हें संसार भर (की ठीकेदारी) लेने से मना नहीं कर रखा ?

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿70﴾

७१. (लूत ने) कहा अगर तुम्हें करना ही है तो ये मेरी बेटियाँ हाज़िर हैं।[1]

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿71﴾

७२. तेरी उम्र की क़सम! वे तो अपने नशे में फिर रहे थे।[2]

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿72﴾

[1] यानी तुम उन से विवाह कर लो या अपने क़ौम की औरतों को बेटियाँ कहा, यानी तुम औरतों के साथ विवाह करो या जो विवाहित हैं उन्हें ख़्वाहिश की तकमील अपनी पत्नियों से करनी चाहिए।

[2] अल्लाह तआला नबी ﷺ को मुख़ातिब कर के उनके जीवन की क़सम खा रहा है, जिस से आप ﷺ की फ़ज़ीलत और इज़्ज़त की वज़ाहत हो रही है, लेकिन दूसरे किसी के लिए अल्लाह के

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿73﴾

७३. फिर सूरज निकलते निकलते उन्हें एक कड़ी आवाज ने पकड़ लिया।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ﴿74﴾

७४. आख़िर हम ने उस (नगर) को ऊपर नीचे कर दिया और उन लोगों पर कंकड़ वाले पत्थर बरसाये।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿75﴾

७५. बेशक हर एक शिक्षा हासिल करने वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियां हैं।

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿76﴾

७६. और यह बस्ती ऐसे रास्ते पर है, जिस पर लगातार यातायात होती रहती है।[1]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿77﴾

७७. और इस में ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿78﴾

७८. और ऐक: बस्ती के रहने वाले भी बड़े जालिम थे।[2]

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿79﴾

७९. जिन से आख़िर में हम ने बदला ले ही लिया, ये दोनों नगर खुले (आम) रास्ते पर हैं।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿80﴾

८०. और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।[3]

सिवाय दूसरे किसी की क़सम खाना जायेज नहीं है। अल्लाह तआला तो पूरा मालिक है, वह जिसकी चाहे क़सम खाये, उस से कौन पूछने वाला है? अल्लाह तआला फरमाता है कि जिस तरह शराब के नशे में धुत्त इंसान की अक्ल ख़राब हो जाती है, उसी तरह यह अपनी बुराई और भटकावे में इतने मस्त थे कि हजरत लूत की इतनी ठीक बात भी उनकी समझ में नहीं आ पायी।

[1] मुराद ख़ास रास्ता है, यानी लूत की क़ौम की बस्तियां मदीने से सीरिया जाते वक़्त रास्ते में पड़ती हैं। हर मुसाफ़िर को उन्हीं रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है, कहते हैं ये पांच बस्तियां थीं: सदूम, (यह केन्द्रीय बस्ती थी) साअब:, साव:, असर: और दूमा।

[2] ایکة घने पेड़ को कहते हैं, इस बस्ती में घने पेड़ होंगे, इसलिए उन्हें اصحاب الایکة (वन या जंगल वाले) कहा गया है। मुराद उससे शुऐब की उम्मत है और उनका जमाना हजरत लूत के बाद का है और उनका इलाक़ा मदीना और सीरिया के दरम्यान लूत की उम्मत की बस्तियों के क़रीब था, इसे मदयन कहा जाता है।

[3] حجر हजरत सालेह की कौम समूद की बस्तियों का नाम था, उन्हें اصحاب الحجر कहा गया है,

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ (81)

८१. और उन्हें हम ने अपनी निशानियाँ अता की थीं, लेकिन फिर भी वे उन से गर्दन मोड़ने वाले ही रहे।

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ (82)

८२. और ये लोग अपने घर पहाड़ों से काट-काट कर बना लिया करते थे बिना डर के।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ (83)

८३. आखिर में उन्हें भी सुबह होते-होते कड़ी चीख़ (आवाज़) ने आ दबोचा।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (84)

८४. इसलिए उन की किसी तरकीब और अमल ने उन्हें कोई फ़ायेदा न दिया।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ (85)

८५. और हम ने आकाशों और धरती को और उनके बीच की सभी चीज़ों को हक़ के साथ ही बनाया है,[1] और क़यामत ज़रूर-ज़रूर आने वाली है, बस तू ख़ूबी और अच्छाई से सहन कर ले।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ (86)

८६. बेशक तेरा रब ही पैदा करने वाला और जानने वाला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ (87)

८७. और बेशक हम ने आप को सात आयतें दे रखी हैं[2] जो दुहराई जाती हैं, और महान (अज़ीम) क़ुरआन भी दे रखा है।

यह बस्ती मदीना और तबूक के दरमियान थी, उन्होंने अपने पैग़म्बर हज़रत स्वालेह को झुठलाया, लेकिन यहां अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया।" यह इसलिए है कि एक पैग़म्बर का झुठलाना वैसे ही है जैसे सारे पैग़म्बरों को झुठलाया।

[1] सच से मुराद वे फ़ायदे और हित हैं जो आकाश और धरती के बनाने का मक़सद है, या सच से मुराद नेक लोगों को उसके नेक अमल का बदला और बुरे लोगों को उनके बुरे अमल की सज़ा देना है। जिस तरह एक दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया : "अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है और जो धरती में है ताकि वह बुरों को उनकी बुराईयों और नेक लोगों को उन के नेक अमल का बदला दे।" (सूरः अल-नजम-३१)

[2] سبع مثاني से मुराद क्या है ? इस में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ है, सही बात तो यह है कि इस से मुराद सूरः फ़ातिहा है, यह सात आयतें हैं और जो हर नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती हैं।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿88﴾

८८. आप कभी अपनी आँखें इस बात की ओर न दौड़ायें जिसे हम ने उन में से कई तरह के लोगों को अता की है, न उन पर आप ग़म करें और ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रहें।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿89﴾

८९. और कह दीजिए कि मैं स्पष्टरूप (वाज़ेह तौर) से डराने वाला हूँ।

كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿90﴾

९०. जैसाकि हम ने उन तक़सीम करने वालों पर उतारा।

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿91﴾

९१. जिन्होंने इस क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿92﴾

९२. क़सम है तेरे रब की! हम उन सब से ज़रूर पूछ करेंगे।

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿93﴾

९३. हर उस चीज़ की जो वह करते थे।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿94﴾

९४. बस आप[1] इस हुक्म को जो आप को किया जा रहा है खोल कर सुना दीजिए और मुशरिकों से मुँह फेर लीजिए।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿95﴾

९५. आप से जो लोग मज़ाक करते हैं उनके (सज़ा) के लिए हम काफ़ी हैं।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿96﴾

९६. जो अल्लाह के साथ दूसरे देवता (माबूद) बनाते हैं, उन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿97﴾

९७. और हमें अच्छी तरह मालूम है कि उनकी बातों से आप का दिल तंग होता है।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿98﴾

९८. आप अपने रब की बड़ाई और तारीफ़ का बयान करते रहें, और सिर झुकाने वालों में शामिल हो जायें।

---

[1] فاصدع का मतलब वाज़ेह करके बयान करना, इस आयत के नाज़िल होने से पहले आप ﷺ छुपकर दीन की तब्लीग़ करते थे, इस के बाद आप ﷺ ने वाज़ेह तौर से दीन की दावत-तब्लीग़ करना शुरू कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿99﴾ ع

९९. और अपने रब की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आप को मौत आ जाये।

सूरतुन नहल-१६

سُوْرَةُ النَّحْلِ

सूरः नहल मक्का में उतरी और इसकी एक सौ अटठाईस आयतें और सोलह रूकअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اَتٰى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿1﴾

१. अल्लाह (तआला) का हुक्म आ पहुँचा, अब इसकी जल्दी न मचाओ, सारी पाकीज़गी उस के लिए है वह सब से बड़ा है उन सब से जिन्हें ये अल्लाह के क़रीब साझा बतलाते हैं।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿2﴾

२. वही फ़रिश्तों को अपनी वह्यी (प्रकाशना) देकर अपने हुक्म के ज़रिये अपने बंदों में से जिस पर चाहता है उतारता है, कि तुम लोगों को बाख़बर कर दो कि मेरे सिवाय दूसरा कोई इबादत के लायक़ नहीं, इसलिए तुम मुझ से डरो।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿3﴾

३. उसी ने आकाशों और धरती को सच्चाई के साथ पैदा किया, वह उस से बुलन्द है जो मुशरिक (मिश्रणवादी) करते हैं।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿4﴾

४. उस ने इंसानों को वीर्य (नुतफा) से पैदा किया फिर वह खुला झगड़ालू बन बैठा।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿5﴾

५. उसी ने जानवर पैदा किये, जिन में तुम्हारे लिए गर्मी के कपड़े हैं, और दूसरे भी बहुत-से फ़ायदे हैं, और कुछ तुम्हारे खाने के काम आते हैं।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿6﴾

६. और उन में तुम्हारी शोभा (रौनक) भी है, जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी।

وَتَحۡمِلُ أَثۡقَالَكُمۡ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمۡ تَكُونُواْ بَٰلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ ٱلۡأَنفُسِۚ إِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ⑦

७. और वह तुम्हारे बोझ उन नगरों तक उठाकर ले जाते हैं जहाँ तुम बिना आधी जान किये पहुँच नहीं सकते थे, बेशक तुम्हारा रब बड़ा ही शफ़ीक़ और बहुत रहम करने वाला है।

وَٱلۡخَيۡلَ وَٱلۡبِغَالَ وَٱلۡحَمِيرَ لِتَرۡكَبُوهَا وَزِينَةًۚ وَيَخۡلُقُ مَا لَا تَعۡلَمُونَ ⑧

८. और घोड़ों को, खच्चरों को, गधों को (उस ने पैदा किया) ताकि तुम उनको सवारी के साधन के रूप में इस्तेमाल में ले आओ और वे ज़ीनत का ज़रिया भी हैं, दूसरे भी वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जिन का तुम्हें इल्म भी नहीं।[1]

وَعَلَى ٱللَّهِ قَصۡدُ ٱلسَّبِيلِ وَمِنۡهَا جَآئِرٞۚ وَلَوۡ شَآءَ لَهَدَىٰكُمۡ أَجۡمَعِينَ ⑨

९. और अल्लाह पर सीधा रास्ता बता देना है, और कुछ टेढ़े रास्ते हैं, और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर लगा देता।

هُوَ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗۖ لَّكُم مِّنۡهُ شَرَابٞ وَمِنۡهُ شَجَرٞ فِيهِ تُسِيمُونَ ⑩

१०. वही तुम्हारे फ़ायदे के लिए आकाश से बारिश करता है, जिसे तुम पीते भी हो और उसी से उगे हुए पेड़ों को तुम अपने जानवरों को चराते हो।

يُنۢبِتُ لَكُم بِهِ ٱلزَّرۡعَ وَٱلزَّيۡتُونَ وَٱلنَّخِيلَ وَٱلۡأَعۡنَٰبَ وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗ لِّقَوۡمٖ يَتَفَكَّرُونَ ⑪

११. इसी से वह तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर तरह के फल उगाता है। बेशक फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए तो इस में बड़ी निशानियाँ हैं।

وَسَخَّرَ لَكُمُ ٱلَّيۡلَ وَٱلنَّهَارَ وَٱلشَّمۡسَ وَٱلۡقَمَرَۖ وَٱلنُّجُومُ مُسَخَّرَٰتُۢ بِأَمۡرِهِۦٓۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَٰتٖ لِّقَوۡمٖ يَعۡقِلُونَ ⑫

१२. और उसी ने रात-दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है और सितारे भी उसी के हुक्म के अधीन (ताबे) हैं। बेशक इस में अक़्ल वालों के लिए कई तरह की निशानियाँ मौजूद हैं।

---

[1] धरती के निचले हिस्से में, इसी तरह समुद्र में, निर्जल मरूस्थल (सहरा) में और जंगलों में अल्लाह तआला जानदार पैदा करता है, जिनका इल्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी को नहीं और उसी में इंसान की बनाई चीज़ें भी आ जाती हैं जो अल्लाह तआला की दी हुई अक़्ल और इरादा को इस्तेमाल करते हुए उसी की पैदा की हुई कई चीज़ों को कई तरह से जोड़कर बनाता है, जैसे बस, कार, रेलगाड़ी, जहाज़ और वायुयान, और इसी तरह की बेशुमार चीज़ें और जो मुस्तक़बिल में भी आती रहेंगी।

१३. और दूसरे भी (तरह-तरह की) चीज़ें कई रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए धरती में फैला रखी हैं। बेशक नसीहत हासिल करने वालों के लिए इस में बड़ी भारी निशानियाँ हैं।

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿13﴾

१४. और समुद्र भी उसी ने तुम्हारे वश में कर दिये हैं कि तुम इस में से निकला हुआ ताज़ा गोश्त खाओ और उस में से अपने पहनने के लिए ज़ेवर निकाल सको, और तुम देखोगे कि नवकायें इस में पानी चीरती हुई (चलती) हैं और इसलिए भी कि तुम उस के फ़ज़्ल की खोज करो, और हो सकता है कि तुम शुक्रिया भी अदा करो।[1]

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿14﴾

१५. और उस ने धरती पर पहाड़ गाड़ दिये हैं ताकि तुम्हें लेकर न हिले,[2] और नदियाँ और रास्ते बना दिये ताकि तुम मक़सद तक पहुँचो।

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿15﴾

१६. दूसरी भी बहुत-सी निशानियाँ (मुक़र्रर की), और सितारों से भी लोग रास्ता हासिल करते हैं।

وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿16﴾

१७. तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता? क्या तुम कभी नहीं सोंचते?

أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿17﴾

---

[1] इसमें समुद्र की तेज धाराओं को इंसान के अधीन (ताबे) कर देने के बयान के साथ, उसके तीन फ़ायदे भी बयान किये गये हैं। एक यह कि उस से मछली के रूप में ताज़ा गोश्त खाते हो (और मछली मरी भी हो तब भी हलाल है। यहाँ तक कि एहराम की हालत में भी उसका शिकार हलाल है) दूसरे उस से तुम मोती, सीपियाँ, (जवाहरात) निकालते हो। तीसरे उस में तुम नाव और जहाज़ चलाते हो, जिन के ज़रिये तुम एक देश से दूसरे देश जाते हो, तिजारती सामान भी लाते ले जाते हो, जिस से तुम्हें अल्लाह की नेमतें हासिल होती हैं, जिस पर तुम्हें अल्लाह का शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

[2] यह पहाड़ों का फ़ायेदा बयान किया जा रहा है, और अल्लाह का एक बड़ा एहसान भी, क्योंकि अगर धरती हिलती रहती तो धरती पर रहना ही नामुमकिन होता, इसका अंदाज़ा उन भूकम्पों से लगाया जा सकता है जो पल या कुछ देर के लिए आते हैं, लेकिन किस तरह ऊँचे-ऊँचे घरों को गिरा कर नगरों को खण्डहर में बदल देते हैं।

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿18﴾

१८. और अगर तुम अल्लाह की नेमतों का हिसाब करना चाहो तो तुम उसे नहीं कर सकते। बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿19﴾

१९. और जो कुछ तुम छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह सब कुछ जानता है।

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿20﴾

२०. और जिन-जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के सिवाय पुकारते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे ख़ुद पैदा किये हुए हैं।

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿21﴾

२१. मुर्दा हैं ज़िन्दा नहीं, उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि कब उठाये जायेंगे।

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿22﴾

२२. तुम सभी का माबूद सिर्फ़ अल्लाह (तआला) अकेला है और आख़िरत पर ईमान न रखने वालों के दिल मुन्कर (भ्रष्ट) हैं और वे ख़ुद गर्व (तकब्बुर) से भरे हुए हैं।

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿23﴾

२३. बेशक अल्लाह (तआला) हर उस चीज़ को जिसको वे छिपाते हैं और जिसे ज़ाहिर करते हैं अच्छी तरह जानता है। वह घमंडियों को पसन्द नहीं करता।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿24﴾

२४. और उन से जब पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या उतारा है, तो जवाब देते हैं कि पहलों की कथायें हैं।

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿25﴾

२५. (इसी का नतीजा होगा) कि क़यामत के दिन ये लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी भागीदार होंगे जिन्हें बिना इल्म के भटकाते रहे, देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿26﴾

२६. उन से पहले के लोगों ने भी छल किया था, (आख़िर में) अल्लाह ने उन के (साजिश के) घरों को जड़ों से उखाड़ दिया और उनके (सिरों पर) छतें ऊपर से गिर पड़ीं और उनके पास अज़ाब वहां से आ गया जहां का उन्हें ध्यान और ख़्याल भी न था।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿27﴾

२७. फिर क़यामत के दिन भी अल्लाह (तआला) उन्हें रुस्वा करेगा और कहेगा कि मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिन के बारे में तुम लड़ते-झगड़ते थे, जिन्हें इल्म दिया गया था वे जवाब देंगे कि आज तो काफ़िरों को अपमान और बुराई चिमट गयी।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿28﴾

२८. वह जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं, फ़रिश्ते जब उनकी जान निकालने लगते हैं तो उस वक़्त वे झुक जाते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे, क्यों नहीं? अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानने वाला है जो कुछ तुम करते थे।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿29﴾

२९. तो अब तुम सदा के लिए नरक के दरवाज़ों (से नरक) में प्रवेश करो,[1] तो क्या ही बुरी जगह है घमंड करने वालों की।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿30﴾

३०. और परहेज़गारों से सवाल किया जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है तो वह जवाब देते हैं कि अच्छे से अच्छा। जिन लोगों ने नेक काम किये उन के लिए इस दुनिया में भलाई है, और बेशक आख़िरत का घर तो बहुत अच्छा है, और क्या ही अच्छा परहेज़गारों का घर है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿31﴾

३१. सदा रहने वाले बाग़ में वे जायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जो वह माँग करेंगे वहाँ उन के लिए मौजूद होंगी, परहेज़गारों को अल्लाह ऐसे ही बदला अता करता है।

[1] इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि उनकी मौत के बाद तुरन्त उनकी रूहें नरक में चली जाती हैं, और उन की लाश क़ब्र (समाधि) में रहती है जहाँ अल्लाह अपनी क़ुदरत से जिस्म और रूह में दूरी होते हुए भी एक तरह का लगाव पैदा करके अज़ाब देता है, तथा सुबह-शाम उन पर आग पेश की जाती है, फिर जब क़यामत आयेगी तो उनकी रूह उनके जिस्मों में फिर आ जायेंगी और वे सदा के लिए नरक में डाल दिये जायेंगे।

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (32)

३२. वे जिनकी जान फरिश्ते ऐसी हालत में निकालते हैं कि वह पाक-साफ हों, कहते हैं कि तुम्हारे लिये सलामती ही सलामती है अपने उन अमलों के बदले जन्नत में जाओ जो तुम कर रहे थे।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ (33)

३३. क्या यह इसी बात का इंतेजार कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जायें या तेरे रब का हुक्म आ जाये? ऐसा ही उन लोगों ने भी किया जो इन से पहले थे, उन पर अल्लाह (तआला) ने कोई जुल्म नहीं किया बल्कि वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (34)

३४. तो उन के बुरे कामों का बुरा बदला उन्हें मिल गया और जिसका मजाक़ उड़ाते थे, उस ने उन को घेर लिया।[1]

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ (35)

३५. और मुशरिकों ने कहा कि अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो हम और हमारे बाप-दादा उसके सिवाय दूसरे की इबादत न करते न उसके हुक्म के बिना किसी चीज को हराम करते, यही अमल उन से पहले के लोगों का रहा तो रसूलों पर तो केवल खुला पैग़ाम पहुँचा देना है।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ (36)

३६. और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजे कि (लोगो)! केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और तागूत (उस के सिवाय सभी झूठे माबूद) से बचो, तो कुछ लोगों को अल्लाह ने हिदायत अता किया और कुछ पर गुमराही साबित हो गई, अब तुम ख़ुद धरती पर सैर करके देख लो कि झुठलाने वालों का फल कैसा हुआ।

[1] यानी जब रसूल उनसे कहते कि अगर तुम उन पर ईमान नहीं लाओगे तो अल्लाह का अजाब आ जायेगा, तो ये मजाक के तौर पर कहते कि जा अपने अल्लाह से कह दे कि वह अजाब भेज कर हमें बरबाद कर दे, इसलिए उस अजाब ने उन्हें घेर लिया जिसका वह मजाक़ करते थे, फिर उस से बचाव का कोई रास्ता उन के पास नहीं रहा।

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ (37)

३७. अगर आप उन के हिदायत के इच्छुक (ख़्वाहिशमंद) रहे हैं लेकिन अल्लाह (तआला) उसे हिदायत नहीं देता है जिसे भटका दे, और न कोई उनका मददगार होता है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (38)

३८. और वे लोग बहुत बड़ी-बड़ी क़सम खाकर कहते हैं कि मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) ज़िन्दा नहीं करेगा, क्यों नहीं, (ज़रूर ज़िन्दा करेगा) यह तो उसका सच्चा वादा है, लेकिन ज़्यादातर लोग नादानी कर रहे हैं।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ (39)

३९. इसलिए भी कि ये लोग जिस बात में इख़्तेलाफ़ करते थे, उसे अल्लाह (तआला) साफ़ बयान कर दे और इसलिए भी कि काफ़िर ख़ुद अपना झूठा होना जान लें।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ (40)

४०. हम जब किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो केवल हमारा इतना कह देना होता है कि हो जा बस वह हो जाती है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ (41)

४१. और जिन लोगों ने ज़ुल्म सहन करने के बाद अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ा है हम उन्हें सब से अच्छी जगह दुनिया में अता करेंगे, और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है, काश ! लोग इस से वाक़िफ़ होते।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (42)

४२. वे जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर ही भरोसा करते रहे।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (43)

४३. और आप से पहले भी हम मर्दों को ही भेजते रहे जिनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) उतारा करते थे, अगर तुम नहीं जानते तो विद्वानों (इल्म वालों) से पूछ लो।[1]

---

[1] أهل الذكر से मुराद अहले किताब हैं जो पिछले नबियों और उनकी तारीख़ से वाक़िफ़ थे। मतलब यह है कि हम ने जितने भी रसूल भेजे वे इंसान ही थे, इसीलिए मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी अगर इंसान हैं तो यह कोई नई बात नहीं कि तुम उन के इंसान होने के सबब उनकी रिसालत का इंकार कर दो, अगर शक हो तो तुम अहले किताब से पूछ लो कि गुज़रे ज़माने में सभी नबी इंसान थे या फ़रिश्ते, अगर वे फ़रिश्ते थे तो बेशक इंकार कर देना, अगर वे भी सभी इंसान थे तो फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत का सिर्फ़ इंसान होने के सबब इंकार क्यों?

४४. निशानियों और किताबों के साथ, यह ज़िक्र (किताब) हम ने आप की तरफ़ उतारी है कि लोगों की तरफ़ जो उतारा गया है आप उसे वाज़ेह तौर से बयान कर दें, शायद कि वे सोच विचार करें।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿44﴾

४५. बुरा छल-कपट करने वाले क्या इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हैं कि अल्लाह (तआला) उन्हें धरती में धंसा दे या उन के पास ऐसी जगह से अज़ाब आ जाये, जहाँ का उन्हें शक और ख़्याल भी न हो।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۙ﴿45﴾

४६. या उनको चलते-फिरते पकड़ ले, यह किसी तरह से भी अल्लाह (तआला) को मजबूर नहीं कर सकते।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۙ﴿46﴾

४७. या उन्हें डरा-धमका कर पकड़ ले, फिर बेशक तुम्हारा रब बड़ा करूणाकारी (शफ़ीक़) और बड़ा रहीम है।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿47﴾

४८. क्या उन्होंने अल्लाह की मख़लूक़ में से किसी को भी नहीं देखा कि उसकी छाया दायें-बायें झुक-झुक कर अल्लाह (तआला) के सामने सज्दा करती हैं और मजबूरी का प्रदर्शन (इज़हार) करती हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿48﴾

४९. और बेशक आकाशों और धरती के सभी जानदार और सभी फ़रिश्ते अल्लाह (तआला) के सामने सज्दा करते हैं और ज़रा भी घमंड नहीं करते।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿49﴾

५०. और अपने रब से जो उन के ऊपर है कपकपाते (कम्पित) रहते है और जो हुक्म मिल जाये उस के पालन करने में लगे रहते हैं।

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴿50﴾

५१. और अल्लाह (तआला) कह चुका है कि दो माबूद न बनाओ, माबूद तो वही सिर्फ़ अकेला है, बस तुम सब केवल मेरा ही डर रखो।

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْۤا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿51﴾

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿52﴾

५२. और आकाशों में और धरती में जो कुछ है सब उसी का है और उसी की इबादत हमेशा फ़र्ज़ है, क्या फिर भी तुम उस के सिवाय दूसरों से डरते हो?

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿53﴾

५३. और तुम्हारे पास जितनी भी नेमतें हैं, सब उसी की दी हुई हैं, अब भी जब तुम्हें कोई कठिनाई आ जाये तो उसी की तरफ़ दुआ और विनती करते हो।[1]

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿54﴾

५४. और जहाँ उसने वह कठिनाई तुम से दूर कर दी, तुम में से कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार बनाने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿55﴾

५५. कि हमारी दी हुई नेमतों की नाशुक्री करें, (ठीक है) कुछ फ़ायेदा उठा लो आख़िर में तुम्हें मालूम हो ही जायेगा।

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿56﴾

५६. और जिसे जानते बूझते भी नहीं उस का हिस्सा हमारी दी हुई चीज़ों में मुक़र्रर करते हैं। अल्लाह की क़सम! तुम्हारे इस इल्ज़ाम का सवाल तुम से ज़रूर ही क़िया जायेगा।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿57﴾

५७. और वह पाक अल्लाह (तआला) के लिए लड़कियाँ निर्धारित (मुक़र्रर) करते हैं और अपने लिए वह जो अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक हो।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿58﴾

५८. और उन में से जब किसी कोलड़की होने की ख़बर दी जाये तो उसका मुँह काला हो जाता है और दिल ही दिल में घुटने लगता है।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿59﴾

५९. इस बुरी ख़बर के सबब लोगों से छिपा-छिपा फिरता है, सोचता है क्या इस अपमान (ज़िल्लत) के लिये ही रहे या इसे मिट्टी में दबा दे। आह ! क्या ही बुरे फ़ैसले करते हैं?[2]

---

[1] इसका मतलब यह है कि अल्लाह के एक होने का यक़ीन दिल की गहराईयों में मौजूद है जो उस वक़्त उभर कर सामने आ जाता है, जब हर तरफ़ से निराशा के बादल गहरे हो जाते हैं।

[2] यानी लड़की का जन्म सुनकर उनकी यह हालत होती है जो बयान हुई, और अल्लाह के लिए लड़कियाँ चुनते हैं, कैसा ग़लत फ़ैसला है? यहाँ यह न समझा जाये कि अल्लाह तआला भी

६०. आख़िरत पर ईमान न रखने वालों की ही बुरी मिसाल है, अल्लाह के लिए तो बहुत ऊँची मिसाल है, वह बड़ा ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿60﴾

६१. और अगर लोगों के पाप पर अल्लाह उनकी पकड़ करता तो धरती पर एक भी जीव न बचता, लेकिन वह तो उन्हें एक मुक़र्ररा वक़्त तक ढील देता है, फिर जब उनका वह वक़्त आ जाता है तो वह एक पल पीछे नहीं रह सकते और न आगे बढ़ सकते हैं।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿61﴾

६२. और वह अपने लिए जो नापसन्द समझते हैं, उसे अल्लाह के लिए साबित करते हैं, और उनकी ज़ुबानें झूठी बातों का बयान करती हैं कि उन के लिए अच्छाई है। (नहीं-नहीं) हक़ीक़त में उन के लिए आग है और ये नरक-वासियों के अगवा हैं।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿62﴾

६३. अल्लाह की क़सम ! हम ने तुझ से पहले की उम्मतों की तरफ़ भी (अपने रसूल) भेजे लेकिन शैतान ने उन की बुराईयों को उनकी नज़र में अच्छा ठहराया, वह शैतान आज भी उनका दोस्त बना हुआ है और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿63﴾

६४. और इस किताब को हम ने आप पर इसलिए उतारा है कि आप हर उस बात को ज़ाहिर कर दें जिस में वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, और यह ईमानवालों के लिए हिदायत और रहमत है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿64﴾

६५. और अल्लाह (तआला) आकाशों से बारिश करके उस से धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है। बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो सुनें।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿65﴾

लड़कों के मुक़ाबिल लड़कियों को हक़ीर समझता है, नहीं, अल्लाह के सामने लड़का-लड़की में कोई फ़र्क़ नहीं, न जिन्स की बुनियाद पर किसी की हिक़ारत (हीनता) और फ़ज़ीलत का ख़्याल उस के यहाँ है।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

६६. और तुम्हारे लिए तो जानवरों में भी बड़ी शिक्षा है कि हम तुम्हें उस के पेट में जो कुछ है, उसी में से गोबर और ख़ून के बीच से ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए आसानी से पचता है।

وَمِن ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

६७. और खजूर और अंगूर के पेड़ों के फलों से तुम मदिरा बना लेते हो और बेहतरीन सामाने रिज़्क़ (उत्तम जीविका) भी, जो लोग अक़्ल रखते हैं उनके लिए तो इस में भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٨﴾

६८. और आप के रब ने मधुमक्खी को यह समझ दिया[1] कि पहाड़ों में, पेड़ों में और लोगों की बनायी हुई ऊंची-ऊंची टट्टियों में अपने घर (छत्ते) बना।

ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾

६९. और हर तरह के फल खा, और अपने (रब) के आसान रास्तों पर चलती फिरती रह, उन के पेट से (पीने वाला पदार्थ) पेयद्रव (मशरूब) निकलता है, जिस के रंग कई हैं और जिस में लोगों के लिए शिफ़ा है, सोच और फ़िक्र करने वालों के लिए इस में भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾

७०. और अल्लाह (तआला) ने ही तुम सब को पैदा किया है, वही फिर तुम्हें मौत देगा, और तुम में ऐसे भी हैं जो बहुत बुरी आयु की तरफ़ लौटाये जाते हैं कि बहुत कुछ जानने के बाद भी न जानें।[2] बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला और क़ुदरत वाला है।

---

[1] वह्यी (प्रकाशना) से मुराद वह एहसास और वह समझ-बूझ है जो अल्लाह तआला ने अपनी ज़रूरियात के पूरा करने के लिए जानदारों को दी है।

[2] जब इंसान फ़ितरी उम्र से बढ़ जाता है तो फिर उसकी अक़्ल भी कमज़ोर हो जाती है और कई बार अक़्ल ख़त्म हो जाती है और वह बच्चे की तरह हो जाता है। यही बुढ़ापा है जिस से नबी ﷺ ने पनाह माँगी है।

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ (71)

७१. और अल्लाह (तआला) ने ही तुम में से एक को दूसरे पर रिज़्क़ में ज़्यादा अता कर रखी है, लेकिन जिन्हें ज़्यादा अता किया गया है, वह अपनी रोज़ी को अपने अधीन दास (मातहत) को नहीं देते कि वह और ये उस में बराबर हो जायें तो क्या ये लोग अल्लाह के एहसानों को इंकार कर रहे हैं?

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنْ أَزْوَاجِكُم بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ (72)

७२. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम में से ही तुम्हारी बीवियाँ पैदा की और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये और तुम्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने के लिए दीं, तो क्या फिर भी लोग बातिल पर ईमान लायेंगे? और अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री करेंगे?

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ (73)

७३. और वे अल्लाह (तआला) के सिवाय उनकी इबादत करते हैं, जो आकाशों और धरती से उन्हें कुछ भी तो रिज़्क नहीं दे सकते और न कुछ ताक़त रखते हैं।

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (74)

७४. तो अल्लाह (तआला) के लिए मिसाल न बनाओ, अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है और तुम नहीं जानते।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوكًا لَّا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَمَن رَّزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا ۖ هَلْ يَسْتَوُونَ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (75)

७५. अल्लाह (तआला) एक मिसाल को बयान कर रहा है कि एक ग़ुलाम है दूसरे की मिल्कियत का जो किसी बात का हक़ नहीं रखता, और एक दूसरा इंसान है जिसे हम ने अपने पास से बेहतरीन धन दे रखा है, जिस में से वह छुपे और खुले तौर से ख़र्च करता है, क्या ये सब बराबर हो सकते हैं?[1] अल्लाह (तआला) ही के लिए सारी तारीफ़ें हैं, बल्कि उन में के ज़्यादातर नहीं जानते।

---

[1] कुछ आलिम कहते हैं कि यह ग़ुलाम और आज़ाद की मिसाल है कि पहला ग़ुलाम और दूसरा आज़ाद है, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि यह ईमानवालों और काफ़िरों का मुआज़ना है, पहला काफ़िर और दूसरा ईमानवाला है, ये बराबर नहीं। कुछ कहते हैं कि यह अल्लाह तआला और झूठे देवताओं का मुआज़ना है, पहले से मुराद झूठे देवता और दूसरे से अल्लाह है, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। मतलब यही है कि एक ग़ुलाम और आज़ाद, इसके बावजूद कि दोनों इंसान हैं, दोनों अल्लाह की मख़लूक़ हैं और दूसरे भी बहुत-सी बातें दोनों के बीच बराबर हैं, इस के बावजूद मान-सम्मान, इज़्ज़त और एहतेराम में दोनों को बराबर नहीं समझते, तो अल्लाह तआला और पत्थर की एक मूर्ति या एक क़ब्र की ढेरी ये दोनों किस तरह बराबर हो सकते हैं ?

७६. और अल्लाह (तआला) एक दूसरी मिसाल बयान करता है दो इंसानों की जिन में से एक गूंगा है और किसी चीज पर हक़ नहीं रखता, वल्कि वह अपने मालिक पर वोझ है, कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता, क्या यह और वह जो इंसाफ का हुक्म देता है और है भी सीधे रास्ते पर, बराबर हो सकते हैं?

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (76)

७७. और आकाशों और धरती का ग़ैब केवल अल्लाह ही को मालूम है, और क़यामत की बात तो ऐसी ही है, जैसे आंख का झपकना, बल्कि इस से भी ज़्यादा क़रीब। बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (77)

७८. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला है कि उस वक़्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाये कि तुम शुक्रिया अदा कर सको।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (78)

७९ क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो हुक्म के मुताबिक बंधे हुए आकाश में हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं थामे हुए है। बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (79)

८०. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में रहने की जगह बना दिया है, और उसी ने तुम्हारे लिये जानवरों की खालों के घर बना दिये हैं, जिन्हें तुम हल्का पाते हो अपने प्रस्थान (कूच करने) के दिन और अपने पड़ाव के दिन भी, और उन के ऊन, रोयें और बालों से भी उस ने बहुत-सी चीजें और एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए फ़ायदे की चीजें बना दीं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ (80)

८१. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों में से छाया बनायी है। और उसी ने तुम्हारे लिए पहाड़ों में गुफ़ा बनायी हैं और उसी ने तुम्हारे लिए कपड़े बनाये हैं जो तुम्हें गर्मी से महफ़ूज रखें और ऐसे कवच भी जो तुम्हें लड़ाई के वक़्त काम आयें, वह इसी तरह अपनी पूरी-पूरी नेमत अता कर रहा है कि तुम फ़रमाँबर्दार बन जाओ।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿81﴾

८२. फिर भी अगर ये मुँह मोड़े रहें तो आप पर केवल साफ तौर से पहुँचा देना है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿82﴾

८३. ये अल्लाह की नेमत जानते-पहचानते हुए भी उन को नकार रहे हैं, बल्कि उन में से ज़्यादातर नाशुक्रे हैं।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿83﴾

८४. और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न तो इजाजत दी जायेगी और न क्षमा-याचना (तौबा) करने को कहा जायेगा।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿84﴾

८५. और जब ये ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेंगे, फिर न तो उन से हल्की की जायेगी और न वे ढील दिये जायेंगे।[1]

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿85﴾

८६. और जब मुशरिक अपने शरीकों को देख लेंगे तो कहेंगे कि हे हमारे रब ! यही हमारे साझीदार हैं, जिन्हें हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे, फिर वे उनको जवाब देंगे कि तुम पूरे ही झूठे हो।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿86﴾

८७. और उस दिन वे सब (मजबूर होकर) अल्लाह के सामने आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) होना क़ुबूल करेंगे और जो बुहतान लगाया करते थे वह सब उन से खो जायेंगे।

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ِۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿87﴾

---

[1] हल्का न करने का मतलब बीच में कोई आराम नहीं होगा, अज़ाब लगातार बिना किसी तरह की देर के होगा, और न ढील ही दी जायेगी यानी उन्हें तुरन्त कसकर पकड़ लिया जायेगा और जंजीरों से जकड़कर नरक में फेंक दिया जायेगा या माफ़ी माँगने का मौक़ा भी नहीं दिया जायेगा, क्योंकि आख़िरत अमल करने की जगह नहीं बदला हासिल करने की जगह है।

८८. जिन्होनें कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका हम उन्हें अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते जायेंगे,[1] यह बदला होगा उनके फ़साद पैदा करने का।

ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ زِدْنَٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ ٱلْعَذَابِ بِمَا كَانُوا۟ يُفْسِدُونَ ﴿88﴾

८९. और जिस दिन हम हर उम्मत में उन्हीं में से उन के ऊपर गवाह खड़ा करेंगे और तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे, और हम ने तुझ पर यह किताब उतारी है जिस में हर बात का खुला बयान है[2] और हिदायत और रहमत और ख़ुशख़बरी है मुसलमानों के लिए।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِى كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ تِبْيَٰنًا لِّكُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿89﴾

९०. बेशक अल्लाह (तआला) इंसाफ़ का, भलाई का और क़रीबी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों और बुराईयों और ज़ुल्म से रोकता है, वह ख़ुद तुम को नसीहत कर रहा है, ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

۞ إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُ بِٱلْعَدْلِ وَٱلْإِحْسَٰنِ وَإِيتَآئِ ذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ ٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ وَٱلْبَغْىِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿90﴾

९१. और अल्लाह से किये हुए वादे को पूरा करो, जबकि तुम आपस में वादे और अहद करो और क़समों को उनकी मज़बूती के बाद मत तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह (तआला) को अपना उत्तरदायी ठहरा चुके हो,[3] तुम जो कुछ करते हो अल्लाह

وَأَوْفُوا۟ بِعَهْدِ ٱللَّهِ إِذَا عَٰهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا۟ ٱلْأَيْمَٰنَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ ٱللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿91﴾

---

[1] जिस तरह जन्नत में ईमान वालों के कई पद होंगे, उसी तरह जहन्नम में काफ़िरों के अज़ाब में भिन्नता होगी, जो भटके हुए होने के साथ दूसरे लोगों को भटकाने का सबब बने होंगे, उनके अज़ाब दूसरों के मुक़ाबिल ज़्यादा होंगे।

[2] किताब से मुराद अल्लाह की किताब और नबी ﷺ की तफ़सीर यानी हदीस है, अपनी हदीसों को भी अल्लाह के रसूल ﷺ ने अल्लाह की किताब कहा है, जैसाकि उसैफ़ के क़िस्सा वग़ैरह में है। (देखिये सहीह बुख़ारी, किताबुल मुहारेबीन, बाब हल यामुरू इमाम रजुलन फ़यज़रेबुल हद ग़ायबन अन्ह, किताबुल सलात, बाबु ज़िक्रुल बैये वल शराऐ अलल मिम्बर फ़िल मस्जिद) और हर चीज़ का मतलब है माज़ी और मुस्तक़बिल की वे ख़बरें जिनका इल्म ज़रूरी और फ़ायदेमंद है, उसी तरह अम्र और निषेध (ममानिअत) का बयान और वे बातें जिन का दीन, दुनिया, तिजारत और रोज़ी के बारे में इंसान मजबूर है, क़ुरआन और हदीस दोनों में यह सब बातें वाज़ेह कर दी गयी हैं।

[3] क़सम एक तो वह है जो किसी सुलह या अहद के वक़्त उसे पक्का करने के लिए खायी जाती है। दूसरी क़सम वह है जो इंसान अपने तौर से किसी वक़्त भी खा लेता है कि फ़लाँ काम करूँगा या नहीं करूँगा, यहाँ आयत में पहले बयान क़सम का मतलब है कि तुम ने क़सम खायी

तआला उसे अच्छी तरह जानता है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۗ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ (92)

९२. और उस (औरत) की तरह न हो जाना कि जिसने अपना सूत मजबूत कातने के बावजूद टुकड़े-टुकड़े तोड़ दिया कि तुम अपनी क़समों को आपस में छल-कपट का सबब बनाओ, इसलिए कि एक गुट दूसरे गुट से ऊँचा हो जाये, बात केवल यही है कि इस वादे से अल्लाह तुम्हारा इम्तेहान ले रहा है। बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे लिए क़यामत के दिन हर उस चीज को वाजेह करके बयान कर देगा, जिस में तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे थे।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (93)

९३. और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो तुम सब को एक मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहे भटका देता है और जिसे चाहे हिदायत देता है। बेशक तुम जो कुछ कर रहे हो उसकी पूछताछ की जाने वाली है।

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (94)

९४. और तुम अपनी क़समों को आपस के छल-कपट का जरिया न बनाओ, फिर तो तुम्हारे क़दम अपनी मजबूती के बाद डगमगा जायेंगे और तुम्हें सख़्त अजाब चखना पड़ जायेगा क्योंकि तुम ने अल्लाह के रास्ते से रोक दिया और तुम्हें ज़्यादा सख़्त अजाब होगा।

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (95)

९५. और तुम अल्लाह के वादे को थोड़े मूल्य के बदले न बेच दिया करो। याद रखो, अल्लाह के पास की चीज ही तुम्हारे लिए अच्छी है, अगर तुम में इल्म हो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (96)

९६. तुम्हारे पास जो कुछ है सब नाश होने वाला है और अल्लाह के पास जो कुछ है हमेशा रहने वाला है, और सब्र रखने वालों को हम अच्छे अमल का अच्छा बदला जरूर अता करेंगे।

है, क्योंकि दूसरे बयान क़सम के बारे में हदीस में हुक्म दिया गया है कि कोई इंसान किसी काम के लिए भी क़सम खा ले फिर देखे कि ज़्यादा नेकी दूसरे अमल में है यानी क़सम के ख़िलाफ़ करने में है, तो वह नेकी का काम करे और क़सम को तोड़कर उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे।

९७. जो इंसान नेकी के काम करे मर्द हो या औरत, और वह ईमानवाला हो तो हम उसे बेशक सब से अच्छी ज़िन्दगी अता करेंगे, और उन के नेकी के कामों का अच्छा बदला भी उन्हें ज़रूर देंगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿97﴾

९८. क़ुरआन पढ़ते समय धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँगा करो।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿98﴾

९९. ईमानवालों और अपने रब पर भरोसा रखने वालों पर उसका कभी ज़ोर नहीं चलता।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿99﴾

१००. हाँ, उसका असर उन पर ज़रूर है जो उस से दोस्ती करें और उसे अल्लाह का साझीदार बनायें।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿100﴾

१०१. और जब हम किसी आयत की जगह पर दूसरी आयत बदल देते हैं और जो कुछ अल्लाह (तआला) उतारता है, उसे वह अच्छी तरह जानता है, तो यह कहते हैं कि तू तो बुहतान लगाने वाला है, बात यह है कि उन में से ज़्यादातर जानते ही नहीं।

وَاِذَا بَدَّلْنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿101﴾

१०२. आप कह दीजिए कि उसे आप के रब की तरफ़ से जिब्रील हक़ के साथ लेकर आये हैं, ताकि ईमानवालों को अल्लाह (तआला) स्थिरता (सबात) अता करे और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी हो जाये।

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿102﴾

१०३. और हमें अच्छी तरह मालूम है जो काफ़िर कहते हैं कि उसे तो एक आदमी सिखाता है उसकी भाषा जिसकी तरफ़ यह मुख़ातिब कर रहे हैं अजमी (ख़ालिस अरबी भाषा नहीं) है, और यह क़ुरआन तो साफ़ अरबी भाषा में है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿103﴾

१०४. जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं रखते, उन्हें अल्लाह की तरफ़ से भी हिदायत हासिल नहीं होती और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿104﴾

إِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿105﴾

१०५. झूठा इल्ज़ाम तो वही लगाते हैं जिन्हें अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं होता, और यही लोग झूठे है।

مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿106﴾

१०६. जो इंसान अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ़्र करे उसके सिवाय जिसे मजबूर किया जाये और उसका दिल ईमान पर क़ायम हो, लेकिन जो लोग खुले दिल से कुफ़्र करें तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿107﴾

१०७. यह इसलिए कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी से बेहतर समझा। बेशक अल्लाह (तआला) काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं करता।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿108﴾

१०८. यह वे लोग हैं जिन के दिलों पर और जिन के कानों और जिनकी आंखो पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यही लोग ग़ाफ़िल हैं।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿109﴾

१०९. कोई शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ज़्यादा नुक़सान उठाने वाले हैं।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِن بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿110﴾

११०. फिर जिन लोगों ने इम्तेहान में डाले जाने के बाद (धार्मिक कारणों से) हिजरत किया फिर जिहाद किया और सब्र का इज़्हार किया। बेशक तेरा रब इन बातों के बाद उन्हें माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।[2]

---

[1] यह मुर्तद की सज़ा है कि वह अल्लाह के ग़ज़ब और सख़्त अज़ाब के हक़दार होंगे और उसकी दुनियावी सज़ा क़त्ल है।

[2] यह मक्के के उन मुसलमानों का बयान है जो कमज़ोर थे और दीने इस्लाम क़ुबूल करने के सबब काफ़िरों के ज़ुल्म और ज़्यादती का निशाना बने रहे। आख़िर उन्हें हिजरत का हुक्म दिया गया तो वे अपने सगे-सम्बन्धियों, देश, धरती, माल और ज़मीन सब कुछ छोड़कर इथोपिया या मदीना चले गये, फिर जब काफ़िरों के साथ लड़ाई का मौक़ा आया तो पूरी

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿111﴾

१११. जिस दिन हर इंसान अपने लिए लड़ता-झगड़ता आयेगा और हर इंसान को उस के किये का पूरा बदला दिया जायेगा और लोगों पर कभी ज़ुल्म न किया जायेगा।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿112﴾

११२. और अल्लाह (तआला) उस बस्ती की मिसाल पेश करता है, जो पूरे सुख-शान्ति से थी, उसका रिज़्क उसके पास ख़ुशहाली के साथ हर रास्ते से चली आ रही थी, फिर उस ने अल्लाह (तआला) की नेमतों का इंकार किया, तो अल्लाह (तआला) ने उसे भूख और डर का मज़ा चखा दिया, जो बदला था उन के करतूतों का।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿113﴾

११३. और उन के पास उन्हीं में से रसूल पहुँचा, फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा और वे थे भी ज़ालिम।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿114﴾

११४. और जो कुछ हलाल (उचित) और पाक रोज़ी अल्लाह ने तुम्हें अता कर रखी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्रिया अदा करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿115﴾

११५. तुम पर केवल मुर्दा और ख़ून और सूअर का गोश्त और जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवाय दूसरे का नाम लिया जाये हराम है, फिर भी अगर कोई इंसान मजबूर कर दिया जाये और न वह ज़ालिम हो और न हद से बढ़ने वाला हो, तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

बहादुरी से लड़ने के लिए जिहाद में पूरी तरह से हिस्सा लिया और फिर उस रास्ते की कठिनाईयों और दुखों को सब्र के साथ सहन किया। इन सभी बातों के बाद बेशक उनके लिए तुम्हारा रब मेहरबानी और रहम करने वाला है, यानी रब की मेहरबानी और रहमत को हासिल करने के लिए ईमान और गुनाह के अमल का होना ज़रूरी है। जैसाकि बयान किये गये मुहाजिरों ने ईमान और अमल का सब से अच्छा मुज़ाहिरा किया तो रब की मेहरबानी और रहमत से वे कामयाब हुए।

११६. और किसी चीज को अपने मुंह से झूठ ही न कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह पर झूठा आरोप कर दो,[1] बेशक अल्लाह (तआला) पर झूठा आरोप करने वाले कामयाबी से महरूम ही रहते हैं।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ﴿116﴾

११७. उन्हें बहुत कम फ़ायेदा हासिल होता है और उन के लिए ही दर्दनाक अज़ाब है।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿117﴾

११८. और यहूदियों पर जो कुछ हम ने हराम किया था उसे हम पहले ही से आप को सुना चुके हैं, हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿118﴾

११९. कि जो कोई जिहालत से बुरे अमल करे, फिर उस के बाद तौबा (क्षमा-याचना) कर ले और सुधार भी कर ले, तो फिर आप का रब बेशक बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿119﴾

१२०. बेशक इब्राहीम अगुवा[2] और अल्लाह तआला की इताअत करने वाले एकसू बेगर्ज थे, और वह मुश्रिकों में से न थे।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿120﴾

१२१. अल्लाह तआला की अता की हुई नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह (तआला) ने उन्हें निर्वाचित (मुन्तख़ब) कर लिया था और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे दिया था।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿121﴾

१२२. और हम ने उन्हें दुनिया में भी अच्छाई दी, और बेशक वह आख़िरत में भी नेक लोगों में से हैं।

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ؕ﴿122﴾

---

[1] यह इशारा है उन जानवरों की तरफ़ जो वह मूर्तियों के नाम नजर करके उनको अपने लिए हराम कर लेते थे। जैसे बहीर:, साएब:, वसील: और हाम वग़ैरह (आदि)। (देखिये सूर: अल-मायेद:-१०३, सूर: अल-अंनाम-१३९ से १४१ तक की तफ़सीर)

[2] 'उम्मत' का मतलब मुखिया और अगुवा भी है जैसाकि तर्जुमा से वाजेह है, और उम्मत का मतलब पैरोकार भी है। इस बिना पर हज़रत इब्राहीम का अस्तित्व (वजूद) एक उम्मत के बराबर था। (उम्मत के मतलब के लिए सूर: हूद-८ की तफ़सीर देखिये)

१२३. फिर हम ने आप की तरफ़ वह्‌यी (प्रकाशना) भेजी कि आप इब्राहीम हनीफ़ के मज़हब की इत्तेबा करें,[1] और वह मुश्‍रिकों (अनेकेश्‍वर के पुजारियों) में न थे।

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿123﴾

१२४. शनिवार के दिन (की अहमियत) को तो केवल उन लोगों के लिए ही ज़रूरी किया गया था जिन्होंने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, बात यह है कि आप का रब ख़ुद ही उन में उन के इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला क़यामत के दिन करेगा।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿124﴾

१२५. अपने रब की तरफ़ लोगों को हिक्मत और अच्छी शिक्षा के साथ बुलायें और उन से अच्छी तरह से बात करें, बेशक आप का रब अपने रास्ते से भटकने वालों को भी अच्छी तरह जानता है और वह रास्ते पर चलने वालों से भी पूरी तरह से वाक़िफ़ है।

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَٰدِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿125﴾

१२६. और अगर बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुँचाया गया हो, और अगर सब्र करो तो बेशक साबिरों के लिए यही बेहतर है।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّٰبِرِينَ ﴿126﴾

१२७. आप सब्र करें बिना अल्लाह की रहमत से आप सब्र कर ही नहीं सकते और उनकी हालत से दुखी न हों और जो छल-कपट यह करते हैं; उन से तंग दिल न हो।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿127﴾

१२८. यक़ीन करो कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों और नेकी करने वालों के साथ है।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿128﴾

[1] 'मिल्लत' का मतलब है ऐसा दीन जिसे अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी के ज़रिये लोगों के लिए जायेज़ और फ़र्ज़ किया है। नबी ﷺ इस के बावजूद कि आप ﷺ सभी नबियों सहित आदम की औलाद के सरदार हैं, आप ﷺ को इब्राहीम के धार्मिक नियमों की इत्तेबा करने के लिए कहा गया है, जिससे हज़रत इब्राहीम की अहमियत और फ़ज़ीलत की तसदीक़ होती है, वैसे मौलिक रूप (अख़लाक़ी तौर) से सभी नबियों के धार्मिक नियम और मज़हब एक ही रहे हैं, जिस में रिसालत के साथ तौहीद और आख़िरत को बुनियादी हैसियत हासिल है।